चल अकेला लड़ अकेला

कल मरने वाला हूँ, ये सोच

आज क्यूँ मरु मै ?

मेरे पास आज है,

ये समा भी मेरा अपना है ।

चलो जो करना है

करलूँ मै अभी अभी,

मेरे पास आज है ।

मै अकेला हूँ,

अकेला ही काफी हूँ ।

क्यूँ उम्मीद रक्खूँ मै

किसी और से ??

खुदपे भरौंसा है मुझे ।

मै अकेला नहीं अब

मेरे साथ मै हूँ ।

पूरी दुनिया से लड़ने को

मै तैयार हूँ ।

सिर्फ साँसो का चलना

जिंदा होना नहीं है ।

आगे बढ़ते रहेना ही

ज़िंदादिली का नाम है ।

ग्लोबेलियन, विश्वात्मा

डॉ. चैतन्य पटेल